जी20 प्रेसीडेंसी और वैश्विक बाजार

साक्षी खरबन्दा[1], दिशा गर्ग[1] एवं मीनाक्षी गर्ग[2]

जी20 जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण और अकिफायती ऊर्जा बिलों पर इस पहल से सीखने को साझा करने के अवसर को अभिव्यक्त करता है। पिछले साल दुनिया के पहले वैश्विक ऊर्जा संकट की शुरुआत देखी गई है, बाजारों में उतार चढ़ाव और तेज कीमतों में वृद्धि के साथ नागरिकों, व्यवसायों और सरकारों के लिए कठिनाइयाँ पैदा हुई है। हालांकि भारत कई देशों की तुलना में संकट से अधिक अछूता रहा है, लेकिन यह अभी भी प्रभावित हुआ है। जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण की प्रमुख चुनौतियों का सामना करने वाली दुनिया के साथ, नवीनतम संकट ने कई लोगों को फिर से यह देखने के लिए प्रेरित किया है कि वे ऊर्जा का उपयोग कैसे करते हैं।

दैनिक उपयोग की वस्तुओं की ऊर्जा दक्षता में सुधार के प्रयास - घरेलू उपकरणों से लेकर कारों तक - आदतों और व्यवहार में बदलाव के साथ-साथ दुनिया के ऊर्जा उपयोग को अधिक टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

भारत की पर्यावरण के लिए नई लाइफस्टाइल (लाइफ) हल एक महत्वपूर्ण मंच है जो ऊर्जा लागत, कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन, वायु प्रदूषण और ऊर्जा खपत में असमानताओं को कम करने में मदद कर सकता है। 'लाइफ' दुनिया भर में स्थायी जीवन शैली और उपभोग विकल्पों को बढ़ावा देकर वैश्विक मुद्दों पर भारत के नेतृत्व को प्रदर्शित करता है। यह कार्यक्रम संभावित रूप से विकासशील और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं को स्थायी पथ पर समान रूप से रखने में ज्यादा मदद कर सकता है।

भारत का जी20 विकासशील और विकसित दुनिया के बीच की सेतु

आज के दौर में भारत को विकसित ग्लोबल नॉर्थ के खिलाफ एक गुट बनाने के प्रलोभन से बचने की सलाह दी जाती है। संयुक्त उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक संस्थानों के माध्यम से ग्लोबल साउथ को स्थायी आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। वास्तव में भारत अपनी विदेश नीति की उत्तर-औपनिवेशिक जड़ों की ओर लौट रहा है जो कि एक बड़ा प्रश्न है। तथाकथित ग्लोबल साउथ - या विकासशील दुनिया – के नेताओं का एक शिखर सम्मेलन बुलाने का निर्णय निश्चित रूप से भारत के प्राकृतिक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में से एक के साथ फिर से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। विकासशील देशों के साथ अपने जुड़ाव को नवीनीकृत करने और उनके मुद्दों को उठाने का दिल्ली का निर्णय, जिन पर पर्याप्त अंतरराष्ट्रीय ध्यान नहीं जाता है, एक स्वागत योग्य कदम है। इस वर्ष जी20 में भारत का नेतृत्व विकासशील देशों के साथ जुड़ने का एक विशेष अवसर प्रदान करता है। हालाँकि, शिखर सम्मेलन अतीत की ओर सामान्य वापसी नहीं है। 21वीं सदी के संदर्भ और चिंताएँ, 20वीं सदी के मध्य के संदर्भों से बहुत अलग हैं। भारत

[1] शोध छात्रा
[2] वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय विज्ञान संचार और नीति अनुसंधान संस्थान

और ग्लोबल साउथ आज 1970 के दशक की तुलना में बहुत अलग हैं, जब तथाकथित "तीसरी दुनिया" की राजनीतिक लामबंदी चरम पर थी। आज भारत विकास के अवसरों के साथ विश्व शक्तियों के साथ समानांतर रूप में कदम बढ़ा रहा है।

भारत की प्रेसीडेंसी के तहत पीपुल्स जी20

लोगों को अपने जी20 प्रयासों के सामने और केंद्र में रखकर, भारत की अध्यक्षता अच्छी तरह से 'एकजुटता का सेतु' बन सकती है जो एक तेजी से खंडित हो रही दुनिया को पाट सकता है और इसे 'एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य' की ओर ले जा सकता है।

भारत ने प्रतिष्ठित जी20 प्रेसीडेंसी ग्रहण की और बाद में इस वर्ष जी20 लीडर्स समिट का आयोजन करेगा। जबकि जी20 प्रेसीडेंसी भारत के इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण है, जी20 का इतिहास भी "प्रोटोकॉल-संचालित जी20 से पीपुल्स जी20" में स्थानांतरित होकर एक नए अध्याय को जोड़ेगा। "पिछले आठ वर्षों में मोदी सरकार के प्रमुख पहलुओं में से एक लोगों की भागीदारी, जन-केंद्रित शासन, जन-उन्मुख नीतियां और जन-आधारित विकास का यह मॉडल जन भागीदारी से जन कल्याण की ओर ले जाता है। यह प्रशंसा योग्य है कि कुल 45 करोड़ जन धन खाते से लेकर 11 करोड़ स्वच्छ भारत शौचालय हो गए हैं, पीएम आवास योजना के तहत गरीबों के लिए आवास सबसे बड़े मुफ्त टीकाकरण अभियान के तहत 220 करोड़ कोविड टीकाकरण खुराक और 9 करोड़ से अधिक उज्ज्वला गैस कनेक्शन से लेकर सभी के लिए किफायती स्वास्थ्य सेवा आयुष्मान भारत के तहत 50 करोड़ भारतीयों को सुरक्षित किया गया।

जी20 फाइनेंस मीट में, प्रधानमंत्री मोदी द्वारा स्थिरता का आह्वान

दो दिवसीय बैठक की शुरुआत में एक पूर्व-रिकॉर्ड किए गए वीडियो संदेश में, प्रधानमंत्री ने कहा कि कई देश जिन्होंने वैश्विक अर्थव्यवस्था को "एक बारहमासी" प्रवाह दिया है, विशेष रूप से विकासशील अर्थव्यवस्थाएं, अभी भी COVID-19 महामारी के बाद के प्रभावों का सामना कर रही हैं । अस्थिर ऋण स्तरों से कई देशों की वित्तीय व्यवहार्यता के लिए खतरे को हरी झंडी देते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में विश्वास "आंशिक रूप से समाप्त हो गया है क्योंकि वे खुद को सुधारने में धीमे रहे हैं। यह कहना आसान काम नहीं है, भारत ने जी20 के तहत, वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की पहली बैठक में विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं और मौद्रिक प्रणालियों के संरक्षक को वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्थिरता, विश्वास और विकास वापस लाने का आह्वान किया है।

जी20 की बैठक में शिक्षा पर एक मंत्रिस्तरीय घोषणा

बैठक में 83 प्रतिनिधियों की भागीदारी होगी और इससे पहले बातचीत और प्रदर्शनियों की एक श्रृंखला होगी। पुणे में जी20 का चौथा शिक्षा कार्य समूह एक मंत्रिस्तरीय घोषणा के साथ मूलभूत साक्षरता और संख्या, तकनीकी सक्षम शिक्षण, भवन क्षमता और अनुसंधान को मजबूत करने के चार प्राथमिकता वाले मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है।

समूह की चेन्नई, अमृतसर और भुवनेश्वर वाली पिछली बैठकों में इसी तरह के विषयों पर काम किया

गया। स्कूल शिक्षा सचिव के माध्यम से सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में मूलभूत साक्षरता और अंकगणित पर एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला आयोजित की जाएगी, जिसमें राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से सचिवों को अपनी सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करते हुए देखा जाएगा। उन्होंने कहा कि एक अन्य संगोष्ठी शिक्षकों के क्षमता निर्माण की भूमिका की जांच करेगी, साथ ही एक प्रदर्शनी भी होगी जिसमें एडुटेक प्लेटफॉर्म और अन्य की भागीदारी देखी जाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन के बाद स्कूल शिक्षा विभाग ने मातृभाषा में शिक्षा को लोकप्रिय बनाने का काम शुरू कर दिया है। इसके अलावा, उन्होंने कहा, रोजगार के अवसरों पर छात्रों को परामर्श देने के लिए 7,200 से अधिक ब्लॉक-स्तरीय विशेषज्ञ को नियुक्त किया गया है।

पाठ्य पुस्तकों को विभिन्न भाषाओं में मुद्रित और प्रकाशित किया जाएगा। शिक्षकों का प्रशिक्षण बहुत महत्वपूर्ण है और भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) जैसे संस्थानों ने विज्ञान शिक्षकों का प्रशिक्षण लिया है। बहु-विषयक शिक्षा, जो एनईपी शिक्षा का एक प्रमुख घटक है, इस शैक्षणिक वर्ष में 100 से अधिक राज्य विश्वविद्यालयों द्वारा शुरू की जा रही है। यह बहुविषयक अनुसंधान की अनुमति देगा और भारतीय छात्रों के लिए साइलो को तोड़ेगा।

सौरव गांगुली

सौरव गांगुली का जन्म 8 जुलाई 1972 को कलकत्ता में हुआ था और वह चंडीदास और निरूपा गांगुली के सबसे छोटे बेटे हैं। गांगुली की शिक्षा सेंट जेवियर्स कॉलेजिएट स्कूल, कोलकाता में हुई। इसके बाद उन्होंने कोलकाता के सेंट जेवियर्स कॉलेज से वाणिज्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। सौरव चंडीदास गांगुली दादा नाम से (बंगाली में "बड़े भाई") के रूप में जाने जाते हैं, जो पूर्व भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी और भारतीय राष्ट्रीय टीम के कप्तान थे। । अपने खेल करियर के दौरान, गांगुली ने खुद को दुनिया के अग्रणी बल्लेबाजों में से एक के रूप में दिखाया था और राष्ट्रीय क्रिकेट टीम के सबसे महान कप्तानों में से एक बने थे। यह बाएं हाथ से मध्य क्रम में बल्लेबाजी किया करते थे और एक अच्छे ओपनर बल्लेबाज भी रहे है। सचिन तेंदुलकर के बाद वह एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय (वनडे) में भारतीय टीम के दूसरे ऐसे खिलाड़ी बने थे जिन्होंने १० हजार से ज्यादा रन बनाये थे।